वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'

यात्रीक मूल नाम छनि वैद्यनाथ मिश्र। मैथिलीमे यात्री आ हिन्दीमे नागार्जुन नामसँ लिखैत छलाह। हिनक जन्म दरभंगा जिलाक तरौनी गाममे 1911 इसवीक ज्येष्ठ पूर्णिमा दिन भेलनि। सतासी वर्षक आयु मे 5.11.1998 कऽ दिवंगत भेलाह।

यात्रीक पहिल कविता 1929 ई. मे छपलनि। तकरा बाद ई मृत्युपर्यन्त निरन्तर लिखैत रहलाह। मैथिलीमे हिनक तीनटा उपन्यास प्रकाशित छनि-पारो, नवतुरिया आ बलचनमा। कविता -संग्रह छनि-चित्रा आ पत्रहीन नग्नगाछ। ओना, हिनक सम्पूर्ण मैथिली कविताक संकलन, हिन्दी अनुवाद सहित, सेहो उपलब्ध अछि। 'पत्रहीन नग्न गाछ' पर हिनका साहित्य अकादेमी, दिल्लीसँ पुरस्कार सेहो भेटल छनि।

प्रगतिवादी रचनाकारक रूपमे यात्री देश-विदेशमे प्रख्यात छथि। लोक-जीवन, लोक-भावना आ लोक-गरिमाक एहन अडिग रचनाकार भेटब कठिन अछि। 'चित्रा' मैथिली -साहित्यमे प्रस्थान बिन्दु अछि। यात्री उपन्यास आ कविताक अतिरिक्तो विधामे लिखने छथि, मुदा सर्वत्र हुनक दृष्टिकोण आ विचारधारा लोकवादी अछि।

काव्य सन्दर्भ -'नागार्जुन-रचनावली' सँ संकलित 'हऽ आब भेल वर्षा' यात्रीक लोकचेतनाक काव्यमय अभिव्यक्ति अछि। वर्षा नहि भऽ रहल छैक। लोक छटपछा रहल अछि। बेचैन अछि। तखने वर्षा होइत अछि। लोकक जानमे जान अबैत छैक। बाध-बोन हरियर होयत। कदम्ब फुलायत। भगत सभ सलहेसक गीतगाय तेँ गहबर ठीक करत । किसान धानरोपनी करत। खेतक आरि पर बैसि कऽ कलौ खायत आ फसिल नीक होयबाक खुशीमे ओकर मन-मयूर नाचऽ लगतैक।

यात्रीक एहि कविताक अन्त किसानक खुशी पर होइत अछि। बल्कि, ई खुशी ओकरे टा नहि अछि, अन्नक आवश्यकता सभकेँ होइत छैक, आ तकर प्राप्तिक प्रसन्नता सभ प्राणीकेँ होइत छैक। तेँ ई कविता वर्षा - ऋतुक लोकवादी आ यथार्थवादी उपयोगिताकेँ उजागर करैत अछि। कविताक शिल्प आ भाषा भावना केँ मूर्त्त करबामे अत्यन्त सहायक अछि।

हऽ आब भेल वर्षा

प्रतीक्षामे बीति गेल कइएक पहर
प्रतीक्षामे चुइल गत्र-गत्र सँ घाम घैलक घैल
प्रतीक्षामे ठमकल रहलै गाछक पात-पात,
सिहकी नहि चललै बसातक
प्रतीक्षामे सूर्य रहि गेल झाँपल ने जानि कतेकाल
मेघक अऽढ़मे
प्रतीक्षामे सुनलक बड्ड गारि अखाड़क ई मास
हऽ, आब भेल वर्षा
हऽ, आब भीजल संसार
हऽ, आब हल्लुक भेल मोन
हऽ, आब उगला सूर्य
हऽ, आब देखबामे आयल चिड़ै चुनमुन
बीज होयत अंकुर नयनाभिराम
प्रतीक्षाक सुफल भेटतैक ओकरा
बाध-बोन होयत हरियर
जुड़ा जयतनि धरतीक मोन-प्राण
ओढ़ि लेत कदम्बक गाछ
पीयर फुदनाबला झालरि
ठीक-ठाक करत भगता सलहेसक गहबर
दूभि के छीलि-छालि साफ कऽ देतनि आइन

भरि जायत पोखरि भऽ जायत उमड़ान
पसरतै ओहिमे ललका कुमुदिनीक पात....
भरि-भरि दिन भीजत लोक
भरि-भरि दिन धान रोपत लोक
आरि पर बैसिकऽ मझनी खायत लोक
आशाक मचकी पर झूलत लोक
कल्पनाक स्वर्गमे बूलत लोक।

शब्दार्थ

पहर	:	कालक एक परिमान, दिन - रातिक आठम भाग अर्थात् तीन घंटा।
सिहकी	:	बसातक /सिहकब
नयनाभिराम	:	देखबामे मनोरम
बाध-बोन	:	गामसँ बाहरक उपजाउ भूखण्ड आ गाछी-बिरछी
उमडाम	:	पूर्ण रूपेण भरल
मझनी	:	दिनक भोजन, मध्याह्न भोजन।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न-

(i) वैद्यनाथ मिश्र 'यात्रीक' रचना छनि-

(क) 'हऽ, आब भेल वर्षा' (ख) समय-साल

(ग) वन्दना (घ) रौदी

(ii) 'हऽ, आब भेल वर्षा' शीर्षक कविताक रचयिता छथि

(क) 'वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' (ख) चन्दा झा

(ग) रवीन्द्र नाथ ठाकुर (घ) सुकान्त सोम

2. रिक्त स्थानक पूर्ति करू :

(i) प्रतीक्षामे बीति ..... कइएक पहर।

(ii) हऽ, ... भेल वर्षा ।

(iii) जुड़ा जयतनि ..... मोन प्राण।

(iv) भरि-भरि दिन ..... लोक।

(v) कल्पनाक स्वर्गमे ..... लोक।

3. सप्रसंग व्याख्या करू :

(i) हऽ, आब भेल वर्षा

हऽ, आब भीजल संसार

हऽ, आब हलुक भेल मोन

हऽ, आब उगला सूर्य

(ii) भरि-भरि दिन धान रोपत लोक

आरि पर बैसिकऽ मझनी खायत लोक

आशाक मचकी पर झूलत लोक

कल्पनाक स्वर्गमे बूलत लोक

4. लघूत्तरीय प्रश्न -

(i) 'हऽ, आब भेल वर्षा' किनकर रचना अछि ?

(ii) वर्षाक प्रतीक्षा लोक कियैक करैत अछि ?

(iii) मेघक अऽढ़मे कथी झाँपल रहि गेल ?

(iv) वर्षा भेला पर बाध-बोन केहन भऽ जाइत अछि ?

(v) वर्षा भेला पर भगता की करताह ?

5. दीर्घोत्तरीय प्रश्न-

(i) 'हऽ, आब भेल वर्षा' शीर्षक कविताक भावार्थ लिखू।

(ii) पठित कविताक सारांश लिखू।

(iii) वर्षाक प्रतीक्षाक वर्णन कवि कोना कयलनि अछि।

(iv) वर्षा भेलाक उपरान्त प्रकृतिक की रूप होयत ?

(v) वर्षाक बाद लोक खुशीमे की सभ करत ?

गतिविधि -

1. निम्नलिखित शब्दक अर्थ शब्दकोशमे ताकिकेँ लिखू ।

   जुड़ा जयतनि, झालरि, गहबर, मचकी, बूलत।

2. वर्षा ऋतु पर आन कविता स्मरण सुनाउ।
3. वर्षा नहि भेला पर कोन तरहक कष्टकक सामना करय पड़ैत छैक - आपसमे छात्र चर्चा करथि।
4. वर्षाक आगमनसँ लोक कोना आनन्दित भऽ जाइत छथि- छात्र अपनामे चर्चा करथि।

निर्देश-

1. शिक्षक छात्रकेँ यात्रीजीक आन कवितासँ परिचित कराबथि।
2. वर्षासँ लोक लाभान्वित होइत अछि, शिक्षक विस्तारसँ छात्रकेँ बुझाबथि।
3. वर्षा ऋतु पर एकटा निबन्ध वर्गमे शिक्षक लिखाबथि।